शबनम शर्मा की कविताएँ

बिछोह

कोख में आने से
अब तक
तुम्हारा स्पर्ष,
अहसास
चहुँ ओर बिखरी
तुम्हारी यादें,
तुम्हारी खनकती हँसी,
तुम्हारी शरारतें,
फिर कई तरह की
मनुहारें,
तुम्हारे लिये खुदा से
भीख माँगना व तुम्हें
पाना,
तुम्हारे बिछोह की
कल्पना मात्र से काँप
जाना याद है मुझे
आज तुम चली गई
सुना है पराई हो गई
पर मेरा मन नहीं
स्वीकारता, क्यूँकि आज
भी धड़कता है मेरा दिल
सिर्फ तेरे लिये,

पोटली

बड़े नाज़ों से पाल पोस
मैंने पकड़ा दी अपने
प्राणों की डोर किसी
अनजान पथिक को,
देना चाहती समस्त
संसार की खुषियाँ,
कुछ कल्पना भरी,
कुछ यथार्थ से जुड़ी
परन्तु कई जगह
असमर्थ हो जाती
दृढ़ता से कह सकती,
मैंने पकड़ाई है तुम्हें
जाते हुए इक यादों भरी
बड़ी कीमती पोटली।
बिटिया, जब कभी भी
मेरी याद आये, खोल
कर कुछ निकाल लेना
उसे इस्तेमाल भी करना
वही है इक याद भरी
संस्कारों की पोटली,
जो तुम्हें कभी भी
भटकने न देगी।

इन्तज़ार

बीती रात,
झकझोर दिया इक ख्याल ने
उठ बैठी
अंधेरी काली रात में
चहुँ ओर सिर्फ अन्धकार,
बुझ गये सारे दीये,
अरे, कोई टिमटिमा भी नहीं रहा,
ये बेबुनियाद लम्हें
ये सरकती सी ज़िन्दगी
पूछती सिर्फ इक सवाल
अब किसका इन्तज़ार
सलाम होता कुर्सी, जवानी व
पैसे को,
विदाई ले चुके यह सब
रह गई सिमटी सी देह,
खुष्क आँखें, कंपकंपाते हाथ,
टपकती छतें व सिलवटों
से भरे बिस्तर,
नाहक जीने की चाह,
ख्याल जीत गया,
पूछ ही बैठा दोबारा,
बता अब किसका इन्तज़ार।

सिर्फ तेरे लिये।

धोखा

कौन, किसे, कब
धोखा देता
कितना ग़लत,
कभी नहीं।
धोखा दे रही हूँ खुद को,
बनावटी मुस्कुराकर,
झूठे-सच्चे रिश्ते बनाकर
एक उम्मीदों का गुम्बद दिखाकर
इस बेचारे दिल को,
जो सिर्फ़ धड़क सकता है
देख नहीं,
क्यों, आखिर क्यों कर रही हूँ
मैं ऐसा? ग़र सच का आईना
दिखा दिया इसे, तो शायद ये
धड़कना भी बंद कर दे।

एहसास

सौंप कर अपने दिल का
टुकड़ा तुम्हें, मैं निष्चिंत हो गई,
पर कैसे?
उग गये मेरे हृदय पटल पर
एक की जगह दो पौधे
जिन्हें साथ-साथ बढ़ता, लहराता
देखना चाहती।
छुपा लेती अपने हृदय की वेदना,
जब लू या ठंड का झोंका तुम्हें
हिला जाता।
शायद कभी एहसास हो तुम्हें, कि
कितना कठिन होता, अपने जिगर
का टुकड़ा किसी को सौंपना
व अपनी अमानत उसकी
झोली में डालना।

तस्वीर

धुंधली हो गई
सारी यादें,
सारी तस्वीरें,
चूर हो गये सारे
इरादे सारे वादे
समय का पहिया
किसे नहीं रौंदता,
पर क्यूँ नहीं
धूमिल पड़ी
वो तस्वीर, जो
तुम्हारे आने पर
छपी थी मेरे
मानस पटल पर,
सब कुछ स्वार्थहीन
सुन्दर, सलोना,
दिखाता मुझे
सदैव मेरा अक्ष
वही तस्वीर
याद करो, ज़रा याद करो।

□ शबनम शर्मा
अनमोल कुंज, पुलिस चैकी के पीछे, मेन बाजार, माजरा, तह. पांवटा साहिब, जिला सिरमौर, हि.प्र. - 173021
मोब. - 09816838909, 09638569237

मंगलसूत्र

तमाम रसमों-रिवाज़ निभा,
एक बड़ा जमघट बना
शोर-षराबे के माहौल में
सबकी मौजूदग़ी में
पहना दिया उसने मेरे गले में
चंद काले मोतियों का मंगलसूत्र,
जो सदैव याद दिलाता
मायके का विछोह व
सारी उम्र की उम्रकैद एक

दरवाज़ा

आज कितने दिन हो गये
उन्हें गये।
हर पल इन्तज़ार है किसी
माँ, बहन या बूढ़े माँ-बाप को,
हर आहट, हवा का झोंका,
पत्तों की खड़खड़ाहट उन्हें
सोने नहीं देती।
वह तो कुंडी भी नहीं लगाते,
धीरे से सांकल लगा, सिर्फ

अजनबी संग।
चाहते मिटाना मेरा सम्पूर्ण
अस्तित्व,
ढल जाऊँ, बन जाऊँ मैं
उनके घर की उस पुरानी
दहलीज़ सी,
जिसमें आई पुष्तों से कई
बहुएँ, गई कई दादियाँ।
मैं शायद बन भी गई
उस दहलीज़ का पायदान,
जिस पर सिर्फ पाँव ही पोंछे
छोटे से बड़े तक ने,
मेरा मंगलसूत्र घिस गया,
हलकी पड़ गई उसकी टिकड़ी,
मोती भी बदरंग हो गए,
पर कभी षिकायत न की,
क्योंकि ये कभी बदला नहीं जाता।
सिर्फ एक सोच,
मज़बूर करती मुझे
काष कि उस दिन पहनाया होता
किसी ने बाहों का मंगलसूत्र
जो मुझे हर वक्त देता इक सकून
इस घर को अपना कहने के लिये।

लेट जाते।
नींद कोसों दूर, ज़रा सी
आहट पर कई आवाज़ें,
बिट्टुवा, भाई, माँ, बहन
आई है सुनाई देती मुझे,
ये असहनीय, अकथनीय दर्द
जिसका कोई सानी नहीं
क्यूँ दिया प्रभु तूने।
चूंकि, जो चले गये, वो तो
नहीं लौटेंगे, लाख पुकारने
पर भी।
सज़ा भोगते ये मासूम
न जी पाएँगे, न मर पाएँगे
ताउम्र।

□ **शबनम शर्मा**
अनमोल कुंज, पुलिस चैकी के पीछे, मेन बाजार, माजरा, तह. पांवटा साहिब, जिला सिरमौर, हि.प्र. - 173021
मोब. - 09816838909, 09638569237

स्वपन

गोद में नन्हें को लिये,
मुस्करा रही थी,

दोराहा

दौराहे पर खड़ी जिन्दगी,
लिए कई सवाल,

ज़िन्दगी की नाव

ज़िन्दगी की नाव,
इक लम्बी नदी,

खुद ही खुद बतिया
रही थी,
मेरा राजा बेटा, मेरा
राजकुमार
मेरी आँखों का तारा
मेरा राजदुलारा,
कब बड़ा होगा?
मम्मा के लिये लाएगा
इक सुन्दर सी दुलहन
घूमेगी, खाना पकाएगी,
पाँव दबाएगी,
कटेगा बुढ़ापा उस नन्हीं
सी जान की आस पर!
नहीं करेगी अलग वह
पल भर भी, इस नन्हीं जान को,
बड़ा होगा तो क्या?
उसके लिये तो 'नन्हा' ही रहेगा।
पास बैठी बेटी सुन रही सब
कि भोली भाषा में बोल बैठी
''माँ, ऐसा कुछ नहीं होगा,
तूने दादा-दादी को घर से
निकाला है,
ज़मीन पर सुलाया है,
कभी सेवा नहीं की,
पापा को उनसे बतियाने
भी नहीं दिया,
मुझे भी उनके पास
जाने नहीं दिया।''
सुनकर स्तब्ध, हैरान व बेचैन
सोच अपना वही कंटीला भविष्य
जो उसने बो दिया था।

कई बवाल
चहुँ ओर घोर अन्धकार,
टिमटिमाता सा इक तारा,
ममता का सहारा,
क्यूँ बार-बार मेरा हाथ
पकड़, मुझे घसीट लाता
ये उस दौराहे पर
जहाँ से आगे जाना
कठिन,
पीछे आना असंभव,
खींचता तुम्हारी ओर
सिर्फ एक ही जवाब,
कि ज़िन्दगी के बचे पल
तुम्हारे नाम हो जाएँ
लगे मुझे कि किसी काम
आए मेरे ये निश्छल पल
बूढ़ी ज़िन्दगी।

कई उतार-चढ़ाव,
अच्छी लगी।
अचानक इक तूफ़ान
में फंसी, कि भंवर भी
समेट ले गया, पता ही
न चला, कब मेरे चप्पू
मेरे हाथों से छूट बह गये
पानी मेंख् हो गई मैं अकेली
अनाथ उस नाव पर, जिसमें
संजोए थे मैंने अनगिनत सपने,
मन आवाज़ें लगाता, चीखती मेरी
आत्मा, पर अनायास
सूख गई नदी, बह गये सपने
व धीरे-धीरे मेरी नाव भी
निकल गई मुझे छोड़कर अकेला
सिर्फ उस ऊँचे पत्थर पर,
जहाँ से कभी देख सकती थी मैं
उफनता पानी, छलकती लहरें
व उन्माद संगीत।
आती है नज़र इक उम्मीद कि
कभी पानी बरसेगा, नदी बहेगी,
मेरी नाव आयेगी,
मेरी नाव फिर से आयेगी।

□ **शबनम शर्मा**
अनमोल कुंज, पुलिस चैकी के पीछे, मेन बाजार, माजरा, तह. पांवटा साहिब, जिला सिरमौर, हि.प्र. - 173021
मोब. - 09816838909, 09638569237

मेरा कमरा

मेरे अंधेरे कमरे में,
कदम रखने से डरने लगे सब,

कितना कठिन होता है

कितना कठिन होता है
किसी के हाथों की तरफ देखना,

झूठी उम्मीद

अरे, झूठी उम्मीदों से घिरा
ये मेरा दिल,

अंधेरा सबको काटता है
पर आज ये कालिमा मेरी है,
तुमने चिराग जलाने की कोशिश की
शुक्रिया तुम्हारा,
शायद इसलिये कि कभी
तुम भी सांझीदार थी इस
अंधेरे की
लोग जानते नहीं कि हर काली
रात के बाद इक सुबह
आयेगी ज़रूर।
कितना तोड़ा है तुमने
कि आज अपनी किरचों को
पहचानना ही कठिन है
जीवन के हर मोड़ पर थामा
तुम्हारा हाथ।
खुद को मिटा कर जलाया
तुम्हारे घर का दीया,
अफ़सोस, तुम मुँह फेर कर
चले गये,
कभी अहसास न हुआ कि
कैसे कटता है मेरा वक्त,
अधूरी ज़िन्दगी, अधूरी साँसों
के बीच।
आ, जाते हो हर शाम ढले
अपने सरूर में मगरूर
व उम्मीद, कि मैं हँसू
तुम्हें अपनी बाहों का हार,
सच में, मैं कितनी मूर्ख थी
कि दे बैठी तुम्हें जीवन साथी
काम नाम, जिसने सीखा है
सिर्फ अपना स्वार्थ सिद्ध करना
किसी भी हालात में।

एक जिंदा लाश, जिस पर
रहमों-कर्म के चंद सिक्के
फेंक दे दुनिया।
हाथ लगाते ही, लगे ये मेरा
नहीं हैं, गज़ भर लम्बी
हो जाती हैं खर्च की कतारें,
घुट जाता है दम,
बंद हो जाती है आवाज़,
शून्य हो जाते हैं शब्द,
जब कोई कहता है
''कभी ज़रूरत पड़े तो कह देना''
क्योंकि इन्हीं हाथों ने लुटाई है
ज़िन्दगी किसी के अनकहे सवालों
पर।

न जाने कब, कहाँ, क्या
ढूंढ बैठे।
सहारा ले हवा के झोंके का
घूमना चाहे अम्बर, पर
अनायास ही धरती
उसे पुकार बैठे।
गलत होती हैं उम्मीदें, सपने
व सहारे
क्यूंकि हम इन्हें पाना चाहते हैं
देना नहीं,
इसीलिये समझाना होगा इस
बावरे मन को कि सिमट जाये
अपनी ही दिल की
तलहटी में।

निष्ठुर

इतने निष्ठुर हो सकते थे तुम
कभी कल्पना भी नहीं की,
तड़पती सी मछली की तरह
देख, किस तरह अनदेखा कर,
खिल्लियाँ उड़ाते, जिये हो तुम,
इक शब्द, भी
सांत्वना का दे न पाये तुम,
फिर भी दावा करते हो मेरा होने का,
नहीं, अब मैं नहीं अपना सकती तुम्हें
जीना चाहती हूँ चंद लम्हें, जिनमें
स्वार्थ की बू न हो,
सिर्फ मैं रहूँ व मेरी तनहाई
मेरे सपने।

सज़ा

कितनी बड़ी सज़ा दी तुमने
मुझे अपना हाथ थामने की,
चुरा लिया मेरा बचपन,
डाल दिया मुझ पर मनो भार,
सदैव कोसा मुझे एक स्त्री
होने पर,
हमेशा दबंग बने रहे,
पराये से होकर,
कभी न पूछा कि क्या हाल है?
एक सामान सा डाल दिया इक
कोने में, व बटोरते रहे
ऐश, पूंजी व शौहरत
मेरे बलबूते पर।

□ शबनम शर्मा, अनमोल कुंज, पुलिस चैकी के पीछे, मेन बाजार, माजरा, तह. पांवटा साहिब, जिला सिरमौर, हि.प्र. - 173021, मोब. - 09816838909, 09638569237

चैराहा

ज़िन्दगी के चैराहे पर
हलाल कर मेरे जज़बात
मुझे फेंक दिया

स्वार्थी

हमेशा तुम्हारी स्वार्थी
नज़रों ने ढूंढा अपना लक्ष्य
भेज दिया मुझे चंद सिक्के

सीमा

हर बात, हालात को सहने की
एक सीमा होती है,
फायदा उठाना बन गया

चील-कौओं के लिये
तड़पती, चीखती रही
क्योंकि दबोची थी मेरी गर्दन
भयावह सिंह के पंजों ने,
कोई नहीं, कोई नहीं आया
मुझे छुड़ाने,
क्योंकि तमाशा देखना
अच्छा लगता है सबको
डरते हैं सब शेर के पास
आने से, चूंकि दबोच लेगा
वो उन्हें भी।
अचानक लगे कुछ भेड़िये भी
मेरी तरफ लपकने,
सिंह की पकड़ ढीली हुई
मैं उठकर भाग गई
घायल, लहुलुहान
छटपटाती,
गिरी दूर जाकर अपने बिस्तर पर।
आज चहूँ ओर से
झांकती है वही आँखें
कहती कि मैं बच कैसे गई?
विधान भगवान का,
जो करता है सही करता है
बता देता है बुरा वक्त
अपने पराये की पहचान
सिखा देता है जीना झूठी
बैसाखियों के बिना।

कमाने घर से बाहर,
कितनी ही नज़रों के
ढंक, कितनी फटकार,
सह-सहकर कमाया व
बहाया तुम्हारे सपने पूरे
करने हेतू।
गर्व से सीना फुलाकर
सिर उठाकर, कह देते हो
मेरा परिवार, मेरी खुशी
पर तुम्हें कदापि नज़र
नहीं आई इसके पीछे छिपी
किसी के आँसुओं की सीलन,
उनींदी आँखें, भटकता मन
चाहकर भी कभी
तुम देखना नहीं चाहते थे
क्योंकि तुम मर्द हो, सिर्फ
अहंकार से भरे मर्द।

दौड़

मैं भाग रही हूँ
अपने आप से
दूर बहुत दूर,
कोई सवाल पूछना नहीं चाहती,
क्योंकि मेरे सवाल का जवाब
कभी नहीं मिलेगा।
इक पतंग सी विचरती नभ में,
देख रही सभी रिश्तों की डोरियाँ
महसूस हो रहा कि पकड़ ढीली
पड़ गई मेरी पतंग की डोर की
क्योंकि वो ही काटना चाहता
मेरी पतंग जिसने आसमान
में चढ़ाई थी।
अब मैं भाग भी न पाऊँगी
सिर्फ कट जाऊँगी,
सिर्फ कट जाऊँगी।

तुम्हारा स्वभाव,
कितनी क्रूरता, वेदना देते
हो जानबूझ कर
बड़े संतुष्ट नज़र आते हो
एक स्त्री पर हावी होकर,
पर शायद तुम नहीं जानते
कि तुम कितने खोखले हो
गए हो,
प्यार का उमड़ता सागर, रेगिस्तान
बन चुका है,
अब न जाने कब इस रेगिस्तान
में दफ़न हो जाएँ मेरी भावनाएँ
मैं और मेरा भविष्य
चूंकि अब मुझसे और
बर्दाश्त नहीं होता,
लक्ष्य भी कोई नहीं रह गया
इस ज़िन्दगी का।

नाव

इक नाव का खवैया बन बैठी मैं,
कितनी मूर्ख, न नाव मेरी, न सवार,
खुशी-खुशी रात-दिन खेती रही
खेती रही।
सफ़र लम्बा रहा
सवार उतर गये,
अपनी-अपनी मंजिल पाकर
रह गई अकेली मैं और मेरी नाव
नदी का पानी सूख गया
शायद नाव आ लगी किनारे पर
इन्तज़ार करती मैं उन्हीं सवारियों का
दिन, महीने, बरस दर बरस
पर क्या कभी लौट कर सवारियाँ
भी आईं,
नहीं बदलता है वक्त, इन्सान, सोच
तभी चलती है ज़िन्दगी।

शबनम शर्मा
अनमोल कुंज, पुलिस चैकी के पीछे, मेन बाजार, माजरा, तह. पांवटा साहिब, जिला सिरमौर, हि.प्र. - 173021
मोब. - 09816838909, 09638569237

विडम्बना

तुम्हारे घर कदम रखते ही,
ज़िम्मेदारियों का बोझ,
सुबह से रात कब हो जाती
पता ही न चला,
कभी बच्चों की किलकारियाँ,
कभी उनका रूठना-मनाना,
घर में दोस्तों संग धमाल मचाना,
याद है मुझे।
करके नन्हीं-नन्हीं शरारतें,
छिप जाना, फिर मुस्कुरा कर
सिर्फ यही कहना माँ, पापा से
मत बताना, याद है मुझे।
दिन, हफ्तों में,
हफ्ते महीनों में,
महीने वर्षों में बदल गये
वो नन्हीं मुस्कुराहटें, हँसी
में, और हँसी परायेपन में
बदल गई
पता न चला,
तरस जाता दिन कि दो बातें करूँ,
दो पल बिठाऊँ उन्हें अपने पास,
पर आज वो मेरी जगह ले चुके,
वक्त का मोहरा बदल चुका
तब मेरे पास वक्त न था,
आज वो व्यस्त हैं
विडम्बना, शायद इक मज़बूत डोर
स्नेह, विश्वास और प्यार की
जोड़े है मुझे उन संग।

वो पल

आज बहुत खुश हूँ मैं,
महसूस की है
तेरी आवाज़ में वो खुशी की कंपन,
जो तेरे पैदा होने पर
तेरे बाप ने की थी।
चाहती थी मेरे सामने,
तू भी महसूस करे
कि क्या होता है माँ-बाप बनना,
किस तरह तड़पते हैं
औलाद की खुशी पाने को
मेरा ज़िन्दगी का यही अनमोल
क्षण है आज,
जब तूने सुनी है
यह प्यारी नन्हें की
किलकारी।

संस्कार

नन्हीं कली से
कब तू बड़ी हो गई
चल दी शाला, फिर
ससुराल, आज छोड़
मेरा आँगन, जा रही
तू बनने किसी और के
घर की तुलसी,
तो सौंपती हूँ तुझे
सबसे छिपकर इक नन्हीं सी पोटली
सिर्फ संस्कारों से भरी,
कभी भी तुझे
ज़रूरत पड़े, शान्त मन से
खोल लेना, ये तुम्हें देंगी
हर समस्या का हल,
संभाल कर रखना,
चूंकि, जोड़ी है इसमें
मैंने रकम तिल-तिल
करके, सिर्फ दो शब्द
सुनने हेतु,
वाह, क्या माँ रही होगी
इस बेटी की।

शबनम शर्मा
अनमोल कुंज, पुलिस चैकी के पीछे, मेन बाजार, माजरा, तह. पांवटा साहिब, जिला सिरमौर, हि.प्र. - 173021
मोब. - 09816838909, 09638569237

□ **शबनम शर्मा**

अनमोल कुंज, पुलिस चैकी के पीछे, मेन बाजार, माजरा, तह. पांवटा साहिब, जिला सिरमौर, हि.प्र. - 173021

मोब. - 09816838909, 09638569237

मूक स्तर

शून्य में ताकते,
मूक से कुछ स्वर,
वो ही समझ सकते,
जिन्हें कभी दावा था
इस बात का,
कि वो हमें अपनी
जान मानते हैं।
लेकिन आज वक्त
बदल गया
चल दिये वो, बिन
निहारे, बिन छुए
मेरे शब्द भीग गये,
दौड़ पड़े सिसकियों के बीच
ढूंढने उस शख्स को
जिसने इतना बदला था मुझे
और आज खुद बदल गया।

पल

भूल जाना चाहती
वो कड़वे पल
जो तुमने मुझे दिये
पर नहीं भूला पाती
रिस जाते मेरे घाव
देते मुझे अथाह पीड़ा,
तड़प उठती मैं,
बैठ जाती आधी रात में भी,
करवटें गवाह बनती,
बिस्तर पर पड़ी शिकनों की,

वक्त के परिंदे

वक्त चल रहा
या वक्त खड़ा
कोई नहीं जानता
लेकिन इतना
महसूस कर सकती,
वक्त लिये दोनों हाथों
में कुछ परिंदे,
दिखा रहा हमें उनके पर,
तेवर और उड़ान
देता हम सबको बारी-बारी
दिखाता उसकी चाल
पकड़ कर रख ले, या उड़ने दे
छोड़ जाता हमारे हाल।
दिखता उन परिंदो संग
उड़ान भरता हर इक शख्स
खड़ा हुआ वक्त बनाता
कहानियाँ कहता, ‘‘मुँह ताकता
रह गया इन्सान’’
उड़ गये वक्त के परिंदे
लिये उसकी पहचान।

संस्कृति

घर की दहलीज़ से शुरु
होकर, घर का कोना-कोना
ढूंढती,
निहारती छत, आसमान, धूप
व छाँव,
छोटे-बड़े व बुज़ुर्गों के
काँपते पाँव,
कुछ दुआएँ, कुछ कर्म,
भले-बुरे,
कहीं रूदन, तो कहीं

वो

बरसों बाद मेरे घर की
दहलीज़ पर दस्तक,
किवाड़ खोला,
हतप्रभ, इक बुत बनी,
वो, वो, वो, बरसों बाद,
मैं मुड़ी, वो भी अन्दर
चला आया, मेरे पीछे,
चुपचाप, हलके कदमों से,
इक बच्चे की तरह,
हाथ बाँधे बैठ गई
सामने वाली कुर्सी पर,
थरथरा रही थी देह,
काँप रहा था स्वर,
पूछा, ‘‘कैसे हो?’’
‘‘वैसा ही’’
बरसों तुम्हें तलाशा। आज पता
चला तो आ गया मिलने।
‘‘तुम-तुम कैसी हो?’’
‘‘वैसी ही’’
इक ठहरे से पल की तरह,
बैठे रहे हम दोनों,
निहारते इक-दूजे को,
वो अनायास खड़ा हुआ
बढ़ा दरवाज़े की ओर
कि मैंने न जाने कब
उसका हाथ थाम लिया
बढ़कर लगाया उसने सीने से,
वो दो क्षण, आसमान रो पड़ा,
रूह काँप गई, मैं पूरी भीग गई
महसूस कर सकती थी,
उसका मूक रूदन,
धड़कता दिल और वो चाहत

गर कोई पूछे, आँखें भारी
क्यों हैं, लाल क्यों हैं,
सवाल अब तुमसे नहीं
सिर्फ उस खुदा से है
कब तक आखिर कब तक
लेगा वो ऐसे इम्तिहान
और रखेगा खड़ा मुझे
इस आग के दरिया में।

खिलखिलाहट,
चली जाती फिर उन बेड़ियों
की सीमाओं में,
वहीं जकड़ कर, मरना पसंद
करती, पर लौटती नहीं,
पुकारती नहीं,
रख लेती हृदय में समा
समस्त संसार,
शायद यही है हमारी
भारतीय संस्कृति।

जो बरसों से दबी थी।
अतृप्त पिपासा छोड़कर,
वो चला गया,
दूर अति दूर, जहाँ से कभी
आवाज़ नहीं आती
कदमों के निशान नहीं दिखते।

□ शबनम शर्मा
अनमोल कुंज, पुलिस चैकी के पीछे, मेन बाजार, माजरा, तह. पांवटा साहिब, जिला सिरमौर, हि.प्र. - 173021
मोब. - 09816838909, 09638569237

माँ

चुपचाप सब ग़म
सीने में छिपाये,
अपनी समस्त इच्छाओं
को दबाए
सुशील, घर का कोना-कोना
निहारती,
उसकी जरूरत कहाँ,
ये बांचती
सोचती किस तरह
मुस्कान देखूं हर चेहरे पर,
भर पेट सो जाये
समस्त परिवार,
कभी 'न' न कहे किसी को,
भले सो जाये, दो कौर
खाये बिन सालन के।
ममता, त्याग का पिटारा
मन में दबाये
सैदव तत्पर, परहित के लिये
यही माँ है।

ज़िन्दगी

मेरे करमों के उतार-चढ़ाव,
कभी भीषण गरमी कभी सरदी,
गरजते बादल, पड़ते ओले,
दिल रोता, आँखें हंसती,
देकर धोखा निकल जाते
अश्रु भी,
मुझे शब्द ही नहीं मिल पाते,
जब कोई कहता, ''कैसे हो?''
मिलते हैं कुछ सहारे
कभी-कभी
कुछ लोग जो अपने न
होकर भी अपने हैं
समझते हैं मेरी उम्र की पीड़ा,
कह जाते हैं चंद शब्द
उपहास या सांत्वना के
पर मैं सदैव रखना
चाहती अपनी ज़िन्दगी
बंद मुट्ठी सी,
रहस्यमयी।

झोंपड़ी

विशालकाय बंगला,
वो तुच्छ सी झोंपड़ी,
मैं चैराहे पर खड़ी
निहार रही उन दोनों के तेवर,
सुनसान, सांए-सांए हवा
बंगले को छूती निकली
तो देखा, झोंपड़ी खिलखिला
रही थी।
पूछ ही बैठी मैं अरे इतनी
खुश क्यों नज़र आ रही?
बोली, देखो, कहीं-कहीं
टिमटिमाती बत्तियाँ,
कभी-जगती कभी बुझती बत्तियाँ,
अलग-अलग डरबों में रहते लोग,
अपनी-अपनी खुशी ग़म सहते लोग,
कभी तो इस दीवार की खबर
उस दीवार को भी न होती।
देर रात से घर आए लोग,
पीछे के दरवाजे से घुस जाते
बंद हो जाते अपने कमरों में, बिन
जलाए इक माचिस की तीली,

स्वपन

दोराहा

गोद में नन्हें को लिये,
मुस्करा रही थी,
खुद ही खुद बतिया
रही थी,
मेरा राजा बेटा, मेरा
राजकुमार
मेरी आँखों का तारा
मेरा राजदुलारा,
कब बड़ा होगा?
मम्मा के लिये लाएगा
इक सुन्दर सी दुलहन
घूमेगी, खाना पकाएगी,
पाँव दबाएगी,
झोंपड़ी।
कटेगा बुढ़ापा उस नन्हीं
सी जान की आस पर!
नहीं करेगी अलग वह
पल भर भी, इस नन्हीं जान को,
बड़ा होगा तो क्या?
उसके लिये तो 'नन्हा' ही रहेगा।
पास बैठी बेटी सुन रही सब
कि भोली भाषा में बोल बैठी
''माँ, ऐसा कुछ नहीं होगा,
तूने दादा-दादी को घर से
निकाला है,
ज़मीन पर सुलाया है,
कभी सेवा नहीं की,
पापा को उनसे बतियाने
भी नहीं दिया,
मुझे भी उनके पास
जाने नहीं दिया।''
सुनकर स्तब्ध, हैरान व बेचैन
सोच अपना वही कंटीला भविष्य
जो उसने बो दिया था।

दौराहे पर खड़ी जिन्दगी,
लिए कई सवाल,
कई बवाल
चहुँ ओर घोर अन्धकार,
टिमटिमाता सा इक तारा,
ममता का सहारा,
क्यूँ बार-बार मेरा हाथ
पकड़, मुझे घसीट लाता
ये उस दौराहे पर
जहाँ से आगे जाना
कठिन,
पीछे आना असंभव,
खींचता तुम्हारी ओर

सिर्फ एक ही जवाब,
कि ज़िन्दगी के बचे पल
तुम्हारे नाम हो जाएँ
लगे मुझे कि किसी काम
आए मेरे ये निश्छल पल
बूढ़ी ज़िन्दगी।

खाते, कभी न खाते
निहारता ही रहता रामू काका
सबके तेवर
खेल लुक्का-छिप्पी का देखता
ये बड़ा दरवाज़ा व बंद हो जाता
रामू काका के सोने पर।
सुनते हो, ऐसा कुछ भी नहीं
मेरी इस झोंपड़ी में,
सब सांझा है सब खुला है
चाहे ग़म या ठहाके।
सुनकर उसकी बात सोच
में पड़ गई
कितनी अमीर, समृद्ध है ये

ये भ्रमित जीवन
किसी भी तरह
जीने नहीं देता
पूछती हूँ इक सवाल
खुद से,
क्यूँ खींचते हैं
कुछ रिश्ते,
जिनसे हम दूर भागते हैं
स्पर्श, उसका पाकर
मदमस्त हो जाते हैं
भूल जाते कि ये भ्रम है
सालों ने एक लम्बी कतार
खींच दी है,
फिर भी बहलाते हैं मन
क्योंकि ये रिश्ते खून के हैं।

□ **शबनम शर्मा**
अनमोल कुंज, पुलिस चैकी के पीछे, मेन बाजार, माजरा, तह. पांवटा साहिब, जिला सिरमौर, हि.प्र. - 173021

मोब. - 09816838909, 09638569237